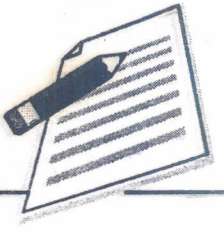

Notes

13

परिवार

व्यक्ति और समाज के लिए परिवार एक महत्वपूर्ण सामाजिक समूह है। विश्व में प्रत्येक व्यक्ति किसी एक या अन्य परिवार का सदस्य होता है। हम सभी लोग परिवार में पैदा हुए हैं जिसमें हमारा पालन-पोषण हुआ है। बच्चों के जन्म के साथ परिवार का आकार भी बढ़ जाता है। कभी-कभी एक परिवार में विभिन्न पीढ़ियों के लोग सम्मिलित रहते हैं।

परिवार, प्रायः, एक केन्द्रीय बिन्दु होता है जिसके इर्द-गिर्द हमारा सम्पूर्ण जीवन घूमता-फिरता है। हम अपने दिन का प्रारम्भ परिवार के साथ करते हैं, इसके बाद अपना पेशेवर और सामाजिक कामकाज करके पुनः परिवार के सदस्यों के साथ लौटते हैं।

आपने यह महसूस किया होगा कि कुछ मजबूरी के कारण आप अपने परिवार से दूर हो जाते हैं और फिर बड़े जोश के साथ परिवार के साथ अपने दुख-दर्द में भागीदारी करते हैं। परिवार के साथ रहने की आपकी इच्छा इस बात को बताती है कि आप परिवार के सदस्यों के साथ में कितने संवेगात्मक बंधन रखते हैं।

इस पाठ में आप यह देखेंगे कि परिवार के कितने विभिन्न पहलू हैं और एक व्यक्ति के जीवन में इन पहलुओं की कितनी भूमिका है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप:

- जानेंगे कि परिवार की परिभाषा क्या है?
- परिवार का समाजशास्त्रीय महत्व क्या है?
- परिवार के लक्षण क्या हैं?
- परिवार के प्रकार्य कौन से हैं?
- परिवार के विभिन्न प्रकारों की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे;
- आप यह भी समझ जायेंगे कि संयुक्त परिवार और इसी तरह आधुनिक परिवार का अर्थ क्या है; और
- परिवार में परिवर्तन कौन से हैं तथा इन परिवर्तनों को लाने वाले कारक कौन से हैं?

13.1 परिवार का अर्थ एवं परिभाषा

परिवार समाज की बुनियादी इकाई है। अपने न्यूनतम स्वरूप में परिवार में पति-पत्नी और बच्चे होते हैं। अपने विशाल अर्थ में परिवार में कई पीढ़ियों के रिश्तेदार होते हैं। ये रिश्तेदार रक्त, विवाह और दत्तकग्रहण को सम्मिलित करते हैं। कानूनी तरीके से विवाहित एक दम्पत्ति जब एक छत के नीचे रहते हैं, वे जन्म के आधार पर परिवार की इकाई को बनाते हैं। दम्पत्ति सामान्य निवास करते हैं और भौतिक संवेगात्मक, सामाजिक और आर्थिक रूप से एक दूसरे की सहायता करते हैं। ये सदस्य एक दूसरे की आवश्यकताओं और विभिन्न महत्वाकांक्षाओं को पूरा करते हैं। परिवार में बच्चों का जन्म परिवार को पूर्णता देता है। इसके अतिरिक्त पति और पत्नी में स्नेह उत्पन्न होता है। यह स्नेह अपने परिवारों में भी देखने को मिलता है।

सामान्य शब्दों में, परिवार कम से कम दो व्यक्तियों के बीच में सामाजिक सम्बन्ध स्थापित करते हैं। परिवार के ये सदस्य जन्म, विवाह और दत्तकग्रहण से जुड़े होते हैं।

परिवार एक नातेदारी समूह है जिसका आधार विवाह की संस्था होती है। इस अर्थ में परिवार एक ही मकान में निवास करता है। इसकी परिभाषा में कहना चाहिए कि परिवार बहुत करके स्थायी सम्बन्ध रखने वाले सदस्यों का समूह है। सदस्यों के ये सम्बन्ध विवाह, रक्त या दत्तक ग्रहण द्वारा बने होते हैं। परिवार प्रजनन प्रदान करता है और इसमें बच्चों का पालन-पोषण और समाजीकरण भी होता है।

यहां तुम्हें यह ध्यान में रखना चाहिए कि परिवार और घर में बड़ा अन्तर है। घर में केवल परिवार के सदस्य ही नहीं रहते हैं अपितु इसके अन्दर वे सभी व्यक्ति होते हैं जो एक दूसरे के सम्बन्धी नहीं होते फिर भी एक ही मकान में निवास करते हैं। इसका

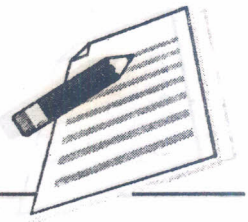

अर्थ यह हुआ कि परिवार में रिश्तेदार रहते हैं, जबकि घर में लोग निवास करते हैं। यह घर और रिश्तेदारी एक दूसरे को पृथक कर देते हैं। देखा जाय तो रहने का जो स्थान है, वह घर है, यह एक कमरा भी हो सकता है। एक व्यक्ति जो अकेला रहता है, कहा जा सकता है कि वह एक घर में रहता है लेकिन परिवार में नहीं।

13.2 परिवार का समाजशास्त्रीय महत्व

परिवार का अध्ययन महत्वपूर्ण है। यह इसलिए कि मानव समाज में परिवार बुनियादी आधार है। समाज के निर्माण में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका यह है कि यह मानव समाज को यानी पुरुष, स्त्री और बच्चों को स्थायी सम्बन्धों में जोड़ता है। इसे मानव प्रकृति की नर्सरी कहा जाता है। परिवार में बच्चों को इस तरह से पाला-पोसा जाता है कि वे वयस्क होने पर विभिन्न परिस्थितियों में कैसा व्यवहार करेंगे यह सुनिश्चित हो सके। दूसरे शब्दों में, परिवार मानव व्यक्तित्व की नींव डालता है।

परिवार को संस्कृति का स्थानांतरण बिन्दु भी कहा जाता है। यह हम जानते हैं कि संस्कृति पर्यावरण का मानव निर्मित भाग है। परिवार में बच्चा संस्कृति के प्रत्येक पहलू से परिचित हो जाता है। जब व्यक्ति वयस्क हो जाता है तो वह अपने व्यक्तित्व के ज्ञान, को सामाजिक मानदण्डों, रीतिरिवाजों और जीवन के भौतिक पहलुओं को छोटे बच्चों को समझाता है।

एक वयस्क व्यक्ति दो प्रकार के परिवारों का सदस्य हो सकता है। एक परिवार वह है जहां उसका जन्म हुआ है। इस परिवार को अभिविन्यास का परिवार कहते हैं। इस प्रकार के परिवार में व्यक्ति की पहचान पुत्र या पुत्री की तरह होती है। यह परिवार व्यक्ति के जीवन और व्यक्तित्व पर निर्माणात्मक प्रभाव डालता है।

विवाह के बाद व्यक्ति जिस परिवार को बनाता है उसे प्रजनन का परिवार कहते हैं। इस परिवार में विवाहित दम्पत्ति बच्चों को जन्म देते हैं और उनका पालन-पोषण करते हैं। इसे निम्न चित्र में देखें:

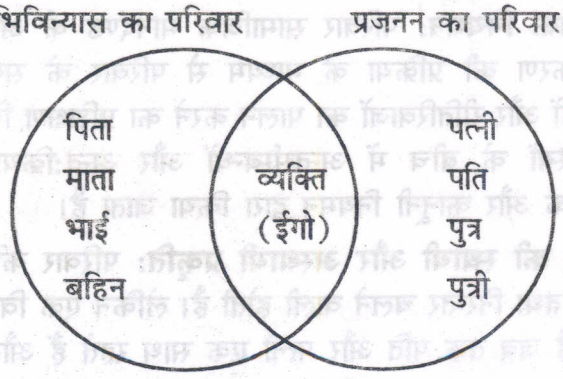

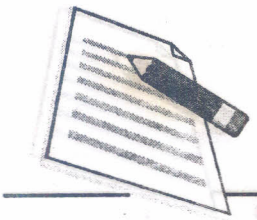

Notes

व्यक्ति और उसी की भांति परिवार के लिए समाजशास्त्र में परिवार का अध्ययन हर तरह से महत्वपूर्ण है।

13.3 परिवार की विशेषताएं

परिवार सामजिक संगठन की बुनियादी इकाई है। इसके कुछ निश्चित लक्षण होते हैं, जो नीचे दिये जा रहे हैं:

(1) **सार्वभौमिकता:** एक सामाजिक इकाई के रूप में परिवार सार्वभौमिक होता है। इस विश्व में कोई भी एक ऐसा समाज नहीं होगा जिसमें परिवार न मिले। इसे सार्वभैमिक इसलिए कहते हैं कि व्यक्ति और समाज के कुछ ऐसे काम हैं जो परिवार के बिना नहीं हो सकते। जैविकीय, आर्थिक, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक प्रकार्य ऐसे हैं जिन्हें परिवार के बिना कोई और सामाजिक संस्था नहीं कर सकती। वास्तव में देखा जाय तो समाज के पास इसका और कोई विकल्प नहीं है जो प्रतिबद्धता और नि:स्वार्थ भाव से उन सब कामों को कर लें जिसे बखूबी परिवार कर लेता है।

(2) **संवेगात्मक आधार:** परिवार के सदस्य एक दूसरे से संवेगात्मक रूप से जुड़े होते हैं। ये सदस्य एक दूसरे को प्यार, परवाह और सुरक्षा देते हैं। परिवार के कल्याण के लिए सदस्य किसी भी त्याग को करने के लिए तैयार रहते हैं।

(3) **सीमित आकार:** बुनियादी रूप से परिवार में पति-पत्नी और उनके अविवाहित बच्चे होते हैं। यह एक छोटा समूह होता है जिसमें सदस्य के रूप में वे लोग होते हैं जो विवाह या रक्त सम्बन्धों से जुड़ा होता है। बड़े परिवार दिन-ब-दिन छोटे आकार के हो रहे हैं।

(4) **सामाजिक संरचना में एकाकी परिवार का स्थान:** सभी सामाजिक समूहों में एकाकी परिवार बुनियादी रूप से अनिवार्य होते हैं। सामान्य या उन्नत समाजों में जो सामाजिक सम्बन्धों की संरचना होती है, उसे बनाने का काम परिवार ही करता है।

(5) **सामाजिक नियमन:** परिवार सामाजिक मानदण्ड के अनुसार कार्य करते हैं समाजीकरण की प्रक्रिया के माध्यम से परिवार के सदस्यों को सामाजिक मानदण्डों और रीतिरिवाज़ों का पालन करने का प्रशिक्षण दिया जाता है। परिवार के सदस्यों के बीच में अन्तर्सम्बन्धों और अन्त:क्रियाओं का मार्ग-दर्शन सामाजिक और कानूनी नियमन द्वारा किया जाता है।

(6) **परिवार की स्थायी और अस्थायी प्रकृति:** परिवार की संस्था सार्वभौमिक होती है तथा निरन्तर चलने वाली होती है। लेकिन एक विशेष परिवार तब तक चलता है जब तक पति और पत्नी एक साथ रहते हैं और वे परिवार के नाम

और परम्परा को बनाये रखते हैं। ऐसा होने पर परिवार की साइकिल का यह पहिया चलता रहता है।

उपर्युक्त विशेष लक्षणों के अतिरिक्त परिवार के कुछ सामान्य लक्षण भी होते हैं, ये लक्षण इस प्रकार हैं:

(1) **मैथुन सम्बन्ध:** एक परिवार का जन्म तब होता है, जब सामाजिक मापदण्डों के अनुसार उनका विवाह हो जाता है। विवाह द्वारा ही पति और पत्नी मैथुन सम्बन्ध रखते हैं और इस तरह वे अपने यौनवृत्ति को संतुष्ट करते हैं। स्वस्थ जीवन बिताने के लिए यौन सम्बन्ध की इस मूल प्रवृत्ति को संतुष्ट करना आवश्यक है।

(2) **सामान्य निवास:** परिवार के सदस्य, सामान्यतया, एक ही छत के नीचे रहते हैं। इन सदस्यों में पति, पत्नी, उनके बच्चे तथा अन्य रिश्तेदार सम्मिलित हैं।

(3) **वंशक्रम की गणना:** परिवार में बुनियादी रूप से द्विवर्ती समूह होते हैं। ये समूह पति और पत्नी की ओर से बने होते हैं। लेकिन इसमें बच्चे पिता के वंश से होते हैं या माता के नाम यानी वंश और सम्पत्ति से जुड़े होते हैं। यह सब स्थायी परम्परा के अनुसार होता है। सामान्यतया, उत्तर भारत में पितृवंशीय परिवार होते हैं और दक्षिण भारत में मातृवंशीय और पितृवंशीय दोनों प्रकार के परिवार पाये जाते हैं।

(4) **आर्थिक व्यवस्था:** प्रत्येक परिवार अपने सदस्यों की आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। सामान्यतया परिवार के वयस्क व्यक्ति किसी न किसी धन्धे को करते हैं और परिवार के सभी सदस्यों की आवश्यकता को पूरा करते हैं। परिवार में यह भी देखा जाता है कि वृद्ध तथा बीमार सदस्यों की देखभाल की जा सके।

पाठगत प्रश्न 13.1

वस्तुनिष्ठ प्रश्न:

(1) निम्न कथन 'सही' है या 'गलत' है बताइए।

परिवार के सदस्य हमेशा सामान्य निवास करते हैं।

(2) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

परिवार के सदस्य एक दूसरे से ..... या दत्तकग्रहण से जुड़े होते हैं।

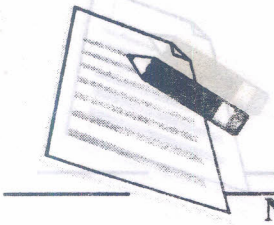

Notes

(3) निम्न में से सही उत्तर छांटिए:

व्यक्ति के जीवन में परिवार एक महत्वपूर्ण समूह है क्योंकि

(1) परिवार के सदस्य एक दूसरे के प्रति निःस्वार्थ और समर्पित भावना रखते हैं।

(2) परिवार के सदस्य रक्त, विवाह या दत्तक ग्रहण के माध्यम से जुड़े होते हैं।

(3) परिवार अपने सदस्यों को आर्थिक और सामाजिक सहायता देता है।

(4) व्यक्ति के समाजीकरण में परिवार की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होती है।

(5) उपरोक्त सभी।

3. परिवार को 'मानव प्रकृति की नर्सरी' कहते हैं क्यों? एक वाक्य में समझाइए।

13.4 परिवार के प्रकार्य

समाज में परिवार के कई तरह के प्रकार्य होते हैं। व्यक्ति और समाज अपनी बुनियादी आवश्यकताओं के लिए बहुत अधिक निर्भर होते हैं। यदि व्यक्ति और समाज की आवश्यकताएं उचित ढंग से पूरी नहीं की जातीं तब दोनों का जीवित रहना कठिन हो जाता है। इस कारण परिवार द्वारा किये गये प्रकार्य बहुत अधिक महत्वपूर्ण हो जाते हैं। यहां हम परिवार के महत्वपूर्ण प्रकार्यों का विवेचन करेंगे।

(1) **जैविकीय प्रकार्य:** परिवार के जैविकीय प्रकार्य कई तरह के होते हैं:

(अ) परिवार के जैविकीय प्रकार्यों में पहला और सबसे महत्वपूर्ण प्रकार्य पति और पत्नी की यौन संतुष्टि है। यह संतुष्टि समाज द्वारा स्वीकृत नियमों से होती है।

(ब) दूसरा महत्वपूर्ण प्रकार्य बच्चों को जन्म देना है। एक बच्चे के रूप में परिवार को एक नई पीढ़ी मिलती है, जो परिवार की धरोहर को हस्तानान्तरित करती है। मानव प्रजाति इस तरह के परिवार से पैदा होने वाले नये सदस्यों से आगे बढ़ती है।

(स) परिवार का एक और जैविकीय प्रकार्य सभी परिस्थितियों में व्यक्तियों को संरक्षण देना होता है। परिवार का एक महत्वपूर्ण कार्य प्रत्येक सदस्य की भौतिक सुरक्षा और उनकी परवाह करना होता है। ऐसी सुरक्षा नवजात बच्चे से लेकर वृद्ध व्यक्ति तक की होती है। संक्षेप में, परिवार अपना यह उत्तरदायित्व समझता है कि वह अपने सदस्यों को भौतिक और मानसिक रूप से योग्य एवं निपुण बनाये रखे।

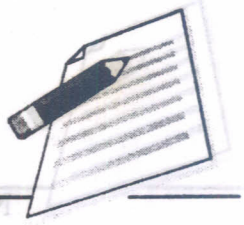

Notes

(2) **आर्थिक प्रकार्य:** जब तक परिवार के लोग आत्मनिर्भर नहीं हो जाते परिवार एक सीमा तक अपने सदस्यों की भोजन, वस्त्र और आवास की आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। परिवार का मुखिया किसी काम-धन्धे या व्यवसाय को अपनाकर अन्य सदस्यों की आवश्यकताओं की पूर्ति अपनी आय से करता है। कभी-कभी परिवार के सदस्य, सामूहिक रूप से, कोई पारिवारिक व्यवसाय, खेती-बाड़ी, पशुपालन, कुटीर उद्योग आदि करते हैं। इस तरह का सामूहिक प्रयास परिवार के सदस्यों को रोजगार और आय देता है।

अन्य आर्थिक प्रकार्य वे हैं, जिसमें परिवार अपने उत्तराधिकारियों को सम्पत्ति और जिम्मेवारियां देता है। परिवार के बच्चों को यह सब प्राप्त होता है।

(3) **बच्चों का समाजीकरण:** परिवार का सबसे अधिक महत्वपूर्ण प्रकार्य बच्चों की देखभाल करना है और उन्हें अपने समाज की संस्कृति के अनुकूल बनाना है। समाजीकरण की प्रक्रिया में परिवार यह निश्चित करता है कि सामाजिक सीख में बच्चे को संस्कृति की भौतिक और इसी तरह से अभौतिक संस्कृति से परिचित करायें। बच्चा परिवार के माध्यम से अपने समाज की भाषा, रीति-रिवाज, व्यवहार, मानदण्ड और मूल्य, विश्वास तथा सामाजिक भूमिकाओं को समझता है। ये सब पहलू अभौतिक संस्कृति के अंग हैं। समाजीकरण की प्रक्रिया में ही परिवार बच्चों को भौतिक संस्कृति देता है। भौतिक संस्कृति का सरोकार खाद्यान्न पैदा करना, मकान बनाना, वाद्य यंत्र बनाना आदि सिखाने से होता है।

वास्तव में, समाजीकरण के बिना संस्कृति का परिवर्तन नहीं हो सकता। देखा जाय तो संस्कृति का अस्तित्व ही परिवार द्वारा किये गये समाजीकरण से होता है। उचित समाजीकरण के क्षेत्र में समाजीकरण करने वाली ऐजेन्सी की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। इस ऐजेन्सी के सदस्यों माता, पिता, और अन्य रिश्तेदारों का व्यवहार स्नेहपूर्ण होना चाहिए। ऐसा होने पर ही बच्चा अपने समाज के मानदण्डों को पूरी तरह से अपने मन से अपनाता है।

(4) **मनोवैज्ञानिक प्रकार्य:** यह मनुष्य का स्वभाव है कि वह बचपन से वृद्धावस्था तक परिवार के सदस्यों के आकर्षण और ज्ञान को अपनी ओर खींचता है। परिवार के सदस्य अपने सदस्यों को संवेगात्मक सहायता, स्थायित्व और सुरक्षा देते हैं। व्यक्ति को यह महसूस होता है कि और कुछ हो या न हो, उसके परिवार के सदस्य तो खराब स्थितियों में उसकी सहायता करने के लिए तैयार रहते हैं।

इसके बदले में एक व्यक्ति परिवार के सदस्यों के लिये अपना समय, शक्ति और धन देता है। वह अपने परिवार के लिये कड़ी मेहनत करता है और एक दिन परिवार के लिये सब कुद छोड़कर विदा हो जाता है।

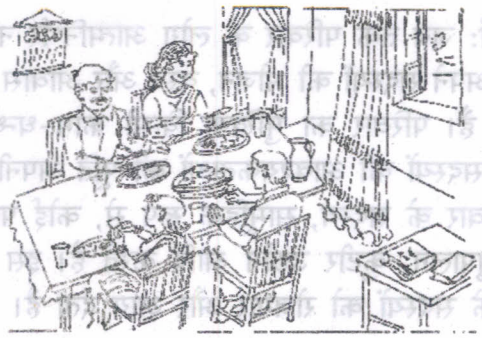

चित्र 12.2: परिवार के सदस्यों द्वारा दिया गया ध्यान और परवाह

पाठगत प्रश्न 13.2

(1) निम्न कथन 'सही' हैं या 'गलत' बताइए:

बच्चे की प्रारम्भिक परवाह और शिक्षा परिवार का प्रकार्य है।

(2) निम्न रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए:

तनावपूर्ण परिस्थितियों में संवेगात्मक सहायता प्रदान करना परिवार का ..... प्रकार्य है।

(3) निम्न में से सही उत्तर छांटिए:

परिवार का प्रकार्य है:

(i) भौतिक सुरक्षा प्रदान करना

(ii) आर्थिक सहायता देना

(iii) समाज के मानदण्डों और मूल्यों द्वारा बच्चे का समाजीकरण करना

(iv) उपरोक्त सभी।

(4) परिवार के किसी एक आर्थिक प्रकार्य की पहचान कीजिए।

13.5 परिवार के प्रकार

परिवार कई प्रकार के होते हैं। परिवार के प्रकारों के वर्गीकरण में विभिन्न कारकों को ध्यान में रखा जाता है।

कुछ महत्वपूर्ण कारकों के आधार पर परिवारों का वर्गीकरण इस प्रकार किया जाता है:

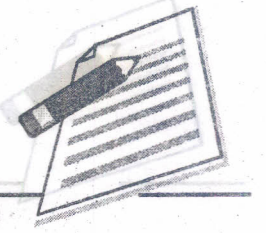

(1) **आवास:** नव विवाहित पति और पत्नी के निवास स्थान को लेकर परिवार के तीन प्रकार हैं:

(अ) पितृ स्थानिक

(ब) मातृ स्थानिक

(स) नव स्थानिक परिवार

(अ) **पितृ स्थानिक परिवार:** जब नव-विवाहित पत्नी अपने पिता के घर को छोड़कर पति के माता-पिता के घर जाती है तो ऐसे परिवारों को पितृस्थानिक परिवार कहा जाता है। भारत के अधिकांश परिवार इसी प्रकार में आते हैं।

(ब) **मातृस्थानिक परिवार:** जब विवाहित जोड़ा पत्नी की माता के घर पर निवास करता है, तब इसे मातृस्थानिक परिवार कहते हैं।

इस प्रकार के परिवार तब बनते हैं, जब अपनी माता के मकान को छोड़कर विवाह के बाद पति के यहां नहीं जाती। दूसरी ओर पति अपनी पत्नी के माता के यहां आता है। इस प्रकार के परिवार में पति अपने पिता के घर को छोड़ देता है। उत्तर-पूर्व की जनजातियों में जैसे कि गारो और खासी में ऐसे मातृस्थानिक परिवार होते हैं।

(स) **नवस्थानिक परिवार:** जब कोई नव विवाहित दम्पत्ति किसी नये घर को बनाता है और जो माता या पिता से पृथक परिवार बनाता है तब ऐसे परिवार को नवस्थानिक परिवार कहते हैं। पश्चिमी सभ्यता में युवा जोड़े नवस्थानिक परिवार में रहना पसंद करते हैं। इसका अर्थ यह है कि वे एक नये परिवार में रहना चाहते हैं जो कि माता और पिता के निवास से भिन्न होता है।

आस्ट्रेलिया की कुछ जनजातियों में विवाहित जोड़ा मामा के पास या मामा के परिवार में रहना पसंद करता है। इस तरह के परिवार को मातुल स्थानीय कहते हैं।

(2) **प्राधिकार:** प्राधिकार की दृष्टि से परिवार दो प्रकार के होते हैं, ये हैं:

(अ) पितृ सत्तात्मक परिवार

(ब) मातृ सत्तात्मक परिवार

(अ) **पितृ सत्तात्मक परिवार:** ऐसे परिवार जिनमें पिता औपचारिक मुखिया होता है और परिवार में प्रशासनात्मक शक्ति पिता के पास ही होती है, पितृ सत्तात्मक परिवार कहलाता है इस प्रकार के परिवारों में प्राधिकार केवल पिता के पास होता है और वहीं परिवार का सबकुछ होता है। स्त्रियों ओर बच्चों को परिवार के पुरुषों के निर्णय और आदेशों को मानना पड़ता है। परम्परागत भारतीय और चीनी परिवार पितृ सत्तात्मक परिवारों के उदाहरण हैं। अधिकांश पितृ सत्तात्मक परिवार पितृ स्थानिक और पितृवंश पारम्परीय होते हैं।

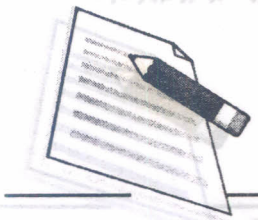

Notes

(ब) **मातृ सत्तात्मक परिवार:** वह परिवार जिसमें मां का स्थान केन्द्रीय होता है और उसका प्राधिकार सबसे ऊपर होता है, मातृ सत्तात्मक परिवार कहलाता है। इस प्रकार के परिवारों में प्राय: घर में मां की शक्ति महत्वपूर्ण होती है। मातृ सत्तात्मक परिवार केरल के नायर और असम के खासी तथा गारो वंशों में पाये जाते हैं। अधिकांश मातृ सत्तात्मक परिवार मातृवंशीय और मातृ स्थानीय होते हैं।

(3) **आकार:** आकार के आधार पर परिवार को दो भागों में बांटा जाता है:

(अ) एकाकी परिवार

(ब) संयुक्त/विस्तृत परिवार

(अ) **एकाकी परिवार:** इस परिवार में पति-पत्नी और उनके अविवाहित बच्चे होते हैं। ऐसे परिवार का आकार छोटा होता है। शहरी क्षेत्रों में एकाकी परिवार अधिक पसंद किये जाते हैं। शहर में परिवार का आकार छोटा इसलिए पाया जाता है कि यहां निवास के लिए स्थान में कमी होती है। इसी तरह शहरों में आर्थिक समस्याएं होती हैं, लोगों की विचारधारा एकाकी होती है और ऐसे ही कई अन्य कारक होते हैं। एकाकी परिवारों में सदस्य एक दूसरे को निकटता से जानते हैं और ये परिवार दाम्पत्य मूलक होते हैं।

(ब) **संयुक्त/ विस्तृत परिवार:** यह परिवार रक्त और वैवाहिक सम्बन्धियों का होता है। इसमें एक से अधिक पीढ़ियां होती हैं। संयुक्त परिवार के सदस्य एक दूसरे को आर्थिक और अन्य प्रकार की सहायता देते हैं। इस परिवार के लोग सामान्य तथा संयुक्त परिवार के मापदण्डों को अपनाते हैं। ये प्राय: एक छत के नीचे रहते हैं और सम्मिलित प्राधिकार उन्हें एक सूत्र में बांध देता है।

विस्तृत परिवार: यह एकाकी परिवार का विस्तृत रूप है। यह विस्तार निकट के रिश्तेदारों को जोड़ देने से बनता है। यह जोड़ समवर्ती नातेदारों के मिल जाने से होता है। इन नातेदारों में एक से अधिक जोड़े होते हैं या कई रक्त सम्बन्धी होते हैं।

बहुविवाही परिवार: जहां एक व्यक्ति एक से अधिक पत्नी या पति से विवाह करता है वह बहुविवाही परिवार कहा जाता है।

किसी प्राथमिक परिवार का तीन या उससे अधिक पीढ़ियों में फैल जाना बहुविवाही परिवार का दृष्टान्त है।

पाठगत प्रश्न 13.3

1. निम्न कथन 'सही' है या 'गलत'; बताइए:

वंशीय संयुक्त परिवार में एक व्यक्ति अपने पुत्र और पौत्र के साथ रहता है।

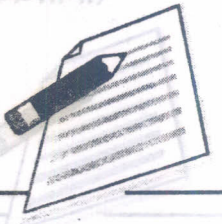

Notes

2. रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए:

..... परिवार में माता के पास सर्वोच्च प्राधिकार होता है।

3. निम्न में से सही उत्तर छांटिए:-

परिवार का वह प्रकार, जिसमें नव-विवाहित जोड़ा मामा के निकट या मामा के घर में रहता है:

(क) मातृ स्थानिक परिवार

(ख) पितृ स्थानिक परिवार

(ग) मातुल स्थानीय परिवार

(घ) नवस्थानीय परिवार

4. संयुक्त परिवार किसे कहते हैं? एक वाक्य में लिखिए।

13.6 भारत में संयुक्त परिवार

13.6.1 अर्थ

प्राचीन काल से भारत में परम्परागत परिवार की संरचना को संयुक्त परित्रार समझते आ रहे हैं।

भारत में संयुक्त परिवार को परिभाषित करते हुए कहा जाता है कि यह लोगों का वह समूह है, जिसमें तीन या अधिक पीढ़ियां एक ही छत के नीचे रहती हैं, एक ही चूल्हे से पका खाना खाती हैं और सामान्य गतिविधियों में भाग लेती हैं। ये लोग नातेदारी व्यवस्था के आधार पर सम्पत्ति में समान अधिकार रखते हैं।

कुछ अन्य लोगों का कहना है कि संयुक्त परिवार में सामान्य निवास और चूल्हे का होना आवश्यक नहीं है। समाजशास्त्रियों का विचार है कि किसी भी परिवार के संयुक्त होने में तीन दशाओं का होना आवश्यक है। ये दशाएं हैं: पीढ़ियों की गहराई, अधिकार और दायित्व और सम्पत्ति।

दो या अधिक परिवारों में नातेदारी सम्बन्ध होता है। ऐसे परिवार अलग-अलग रहते हैं लेकिन संवेगात्मक आधार, संयुक्त सम्पत्ति और एक ही प्राधिकार पर चलने वाले परिवार प्राथमिक परिवार कहे जाते हैं।

संक्षेप में, भारत में संयुक्त परिवार के निम्नलिखित लक्षण हैं:

(1) **यह एक अधिकारवादी संरचना है:** संयुक्त परिवार में परिवार का मुखिया

परिवार और उसके सदस्यों से जुड़े हुए मामलों में निर्णय लेता है। इस मुखिया द्वारा लिया गया निर्णय सभी के लिए अंतिम होता है।

(2) **यह एक परिवारवादी संगठन है:** इसका अर्थ यह है कि संयुक्त परिवार के फैसले व्यक्ति के हक की अपेक्षा परिवार के हक में होते हैं। इस संगठन में व्यक्ति को अपनी वैयक्तिक इच्छाओं, पसंदगियों और नापसंदगियों का बलिदान करना होता है। यह बलिदान परिवार के मानदण्डों, नियमों या परम्पराओं के हक में होता है।

(3) **परिवार में व्यक्ति का दर्जा उसकी उम्र और सम्बन्धों पर निर्भर होता है:** संयुक्त परिवार में वह व्यक्ति जिसकी उम्र ज्यादा होती है, उसकी प्रतिष्ठा ज्यादा होती है, और कम उम्र वाले की प्रतिष्ठा थोड़ी होती है।

इसी तरह एक व्यक्ति अपनी प्रतिष्ठा उसके वैवाहिक और रक्त सम्बन्धी स्थिति से आदरणीय होता है। यह रिश्तेदारी के कारण ही है कि पति, चाचा, चाची और ससुराल के सदस्यों का आदर उनके रिश्तेदारी में ऊंचा स्थान होने के कारण होता है। एक व्यक्ति की प्रतिष्ठा, योग्यता और उससे अर्जित योग्यता से नहीं गिनी जाती।

(4) **वैवाहिक सम्बन्धों की अपेक्षा रक्त सम्बन्ध को वरीयता दी जाती है:** इसका अर्थ यह हुआ कि पति-पत्नी के सम्बन्ध पिता-पुत्र या भाई-भाई के सम्बन्धों से गौण होते हैं।

(5) **परिवार संयुक्त उत्तरदायित्व के आधार पर प्रकार्य करता है:** संयुक्त परिवार का प्रत्येक सदस्य परिवार के अन्य सदस्यों की समस्याओं में भागीदारी करता है और जिस तरह से भी हो सके उनकी मदद करता है।

(6) **संयुक्त परिवार में सभी सदस्यों पर समान ध्यान दिया जाता है:** परिवार की आय को एकत्र कर लिया जाता है और परिवार के प्रत्येक सदस्य की आवश्यकता के अनुसार सहायता दी जाती है। ऊपर हमने संयुक्त परिवार के जो लक्षण बताये हैं वास्तव में वे एक आदर्श तस्वीर प्रस्तुत करते हैं। वास्तव में देखा जाय तो संयुक्त परिवार अपने प्रकार्यों को उनके आदर्श स्वरूप से नीचे ही करते हैं। इसका परिणाम यह हुआ है कि आज परिवार के आदर्श लक्षण आंशिक रूप से कम हो गये हैं।

ऐसे परिवार जो कृषि और व्यवसाय करते हैं उनके लिए संयुक्त परिवार उपयोगी है। कृषि और व्यवसाय ऐसी गतिविधियां हैं जिनमें संयुक्त भूमि और धन की आवश्यकता होती है।

इस भाग को पूरा करने के बाद अब आप निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर दे सकेंगे।

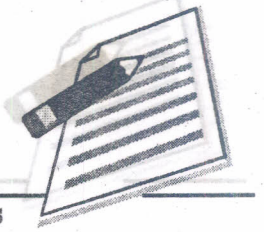

पाठगत प्रश्न 13.4

(1) निम्न कथन 'सही' है या 'गलत'; बताइए:

संयुक्त परिवार का आवश्यक लक्षण सम्मिलित निवास है।

(2) रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए:

संयुक्त परिवार में रक्त सम्बन्ध की वरीयता.....सम्बन्ध से अधिक होती है।

(3) सही उत्तर छांटिए:

संयुक्त परिवार में:

(i) सदस्यों को परिवार के मुखिया के आदेश का पालन करना होता है।

(ii) संयुक्त परिवार में धन उपार्जन या व्यवसाय की उपलब्धियां व्यक्ति की प्रतिष्ठा को नहीं बढ़ाते।

(iii) परिवार के अन्य सदस्यों के दुख-दर्द और खुशी में हर एक की भागीदारी होती है।

(iv) उपरोक्त सभी।

(v) भारत में संयुक्त परिवार के कोई दो लक्षण बताइये।

13.7 परिवार में परिवर्तन लाने के कारक

परम्परागत और आधुनिक परिवार में परिवर्तन लाने वाले कारक निम्न प्रकार हैं: (1) औद्योगीकरण, 2. नगरीकरण, 3. पश्चिमी संस्कृति, 4. आधुनिक शिक्षा, 5. संवैधानिक कारक 6. परिवार में गृह कलह 7. परिवार के प्रकार्यों को करने वाली विभिन्न समितियों का उद्‌भव।

उपरोक्त कारकों के कारण परिवार की संरचना, बनावट और पारस्परिक सम्बन्धों में महत्वपूर्ण परिवर्तन आये हैं। आधुनिक युग में परिवार के प्रकार्यों में काफी परिवर्तन आये हैं। परिवर्तन लाने वाले तत्वों का विवेचन नीचे दिया जा रहा है।

- नगरीकरण और औद्योगीकरण के प्रभाव के कारण परिवार के आकार में कमी आयी है। शहरी क्षेत्रों में बड़े आकार के परिवारों के लिए आवास की समस्या बहुत महत्वपूर्ण हो जाती है। इससे और आगे एक व्यक्ति की आय इतनी पर्याप्त नहीं होती कि वह बड़े परिवार की आवश्यकताओं को पूरा कर सके। इस कारण

आजकल के परिवार में बुनियादी रिश्ते पति-पत्नी और उनके अविवाहित बच्चे रहते हैं। ऐसे परिवारों को एकाकी परिवार कहते हैं।

- एकाकी परिवार में सदस्यों के पारस्परिक सम्बन्ध बदल गये हैं। एकाकी परिवार के सदस्य अधिक समानता के आधार पर सम्बन्ध रखते हैं। उन्हें आंख बन्द करके वरिष्ठ व्यक्तियों के आदेश को सुनना नहीं पड़ता। एकाकी परिवार में पति-पत्नी और बच्चे अपनी पसंदगी और नापसंदगी पर खुलकर विवाद करते हैं। इस परिवार में परिवार और व्यक्तियों के मसले सामूहिक रूप से तय किये जाते हैं।
- कभी-कभी वरिष्ठ और कनिष्ठ पीढ़ियों में संघर्ष इसलिए हो जाता है कि वे एक दूसरे के संदर्भ को समझ नहीं पाते हैं।
- कुछ माता-पिता बच्चों पर पर्याप्त ध्यान नहीं देते। इसका कारण उनका व्यस्त जीवन है। वे बच्चों के उत्तरादायित्व से मुक्त रहना चाहते हैं।
- लड़के और लड़कियाँ माता-पिता द्वारा पसंद किये गये जीवन साथी से विवाह करना नहीं चाहते। ये अपने जीवन साथी का चुनाव इस आधार पर करते हैं कि उनमें आकर्षण है। वे एक दूसरे के कैरियर और व्यवसाय में समान हैं और उनके आर्थिक लाभ भी एक जैसे हैं। जाति, वर्ग और परिवार के मूल्यों की संगतता को अब लड़के-लड़कियां संगत करना पसंद नहीं करते।
- परिवार की आज की स्थिति में नातेदारी के सम्बन्ध अधिक मजबूत नहीं होते। अब परिवार के सदस्य स्वावलम्बी और स्वकेन्द्रित होते हैं। अब उनके पास समय, शक्ति और धन नहीं है कि वे अपने रिश्तेदारों व नातेदारों को दे सकें।
- अब परिवार अपने बच्चों के प्रति केन्द्रित हो गये हैं। संयुक्त परिवार के टूट जाने के कारण माता-पिता अब अपने भाई और बहिन की ओर अधिक ध्यान नहीं दे पाते। माता-पिता का सम्पूर्ण जीवन अपने बच्चों के इर्द-गिर्द घूमता है और उनके द्वारा भविष्य की सभी योजनाएं बच्चों को ध्यान में रखकर ही बनायी जाती हैं।
- परिवार द्वारा किये गये प्रकार्य वास्तविकता से हट कर होते हैं। दूसरी ऐजेन्सियां समाज में आ गयी हैं जो परिवार के सदस्यों की आवश्यकताओं को पूरा करती है। ये ऐजेन्सियां यद्यपि निश्चित भूमिका को करती हैं और अपने प्रकार्यों में सम्पूर्ण नहीं होती। आज जो नई संस्थाएं परिवार के कार्यों को करने के लिये उभर कर आयी हैं उनमें शिशुगृह, बच्चों के लिए दिन में देख-रेख करने वाले केन्द्र, वृद्धाश्रम, नर्सिंग गृह, छात्रावास, रेस्टोरेन्ट, बैंक, क्लब आदि हैं। इस तरह की संस्थाओं ने परिवार के कई प्रकारों को पूरा करने की जिम्मेदारी अपने ऊपर ले ली है। इतना होने पर भी परिवार के सदस्यों में एक दूसरे के प्रति जो संवेग और सहायता होती है वह इन नई संस्थाओं में नहीं पायी जाती।

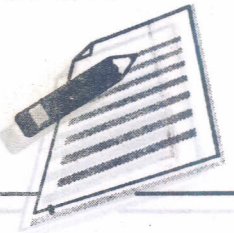

- अधिकांश समाजों में परिवार अब उत्पादन की इकाई नहीं है। उत्पादन में कारखानों के आने के कारण अब घर में वस्तुओं का उत्पादन नहीं होता। इसके परिणामस्वरूप परिवार के सदस्यों को धन्धे के घर से बाहर लिए जाना पड़ता है। इस परिवर्तन ने परिवार के सदस्यों में मानसिक और भौतिक दूरी को बढ़ा दिया है।
- पश्चिमी समाजों में परिवार को अस्थायित्व का मुकाबला करना पड़ता है। इन समाजों में विवाह विच्छेद की गति बढ़ गयी है और आपसी भेदभाव बढ़ गया है। जो दम्पत्ति विवाह विच्छेद करते हैं उनके बच्चों में संवेगात्मक और सामाजिक तनाव आ जाता है। उनके निर्माण की अवधि में उन्हें सहायता देने वाला कोई नहीं होता। वे माता-पिता जो विवाह विच्छेद के बाद अपने बच्चों की देखभाल करते हैं, उन्हें गंभीर तनाव का मुकाबला करना होता है।
- विदेशों में कुछ दम्पत्ति ऐसे होते हैं जो बिना विवाह किये रहते हैं। वे विवाह इसलिए नहीं करते कि वे यदि विवाह कर लेंगें तो उन्हें जल्दी या देर से विवाह-विच्छेद करना पड़ेगा। इस तरह बिना विवाह किये साथ रहने का मतलब हुआ एक साथ रहने और यौन क्रिया करने का सम्बन्ध पाया जाता है। इसका मतलब हुआ मित्रों की तरह एक छत के नीचे रहना और यौन संतुष्टि प्राप्त करना।
- कुछ विवाहित पति-पत्नी व्यवसाय में लगे रहते हैं और सुदृढ़ आर्थिक स्थिति होने पर भी बच्चों का प्रजनन नहीं करते। वे बच्चों को अपने पर भार स्वरूप मानते हैं। इस तरह के परिवार को दोहरी आय और बच्चे नहीं के नाम से जाना जाता है।
- इज़राइल में एक विशेष परिवार व्यवस्था पायी जाती है, जिसे किबूट्ज कहते हैं। किबूट्ज परिवारों और व्यक्तियों का एक ऐसा समूह है जो बच्चों का पालन-पोषण करता है। इसमें माता-पिता से पृथक रहकर बच्चे शिशु गृह में रहते हैं। प्रत्येक किबूट्ज एक पृथक घर होता है, जिसमें 50 से 2000 बच्चे रहते हैं और यहां बच्चों का उत्तरदायित्व सम्पूर्ण समुदाय का होता है जबकि माता-पिता अलग मकानों में रहते है। बच्चे सप्ताहांत में अपने माता-पिता के साथ रहते हैं।
- यह सब होते हुए भी, संरचनात्मक और प्रकार्यात्मक परिवर्तनों के बाद परिवार की भूमिका बच्चों के समाजीकरण में बहुत महत्वपूर्ण है। परिवार अपने सदस्यों को संवेगात्मक सहयोग देता है। बच्चों के प्रजनन और भरण-पोषण में केवल परिवार ही संतोषजनक संस्था है। विवाह और पारिवारिक जीवन की सफलता से जो मनोवैज्ञानिक संतोष और सामाजिक आदर मिलता है उसका गुणात्मक दृष्टि से कोई मुकाबला नहीं है। इसी कारण परिवार एक ऐसी संस्था है जो सार्वजनिक रूप से अपरिहार्य संस्था है।

पाठगत प्रश्न 13.5

1. निम्न कथन 'सही' है या 'गलत'; बताइए:

   बच्चे की देखभाल करना और उसको शिक्षा देना परिवार का आवश्यक प्रकार्य है।

2. रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए:

   आधुनिक परिवार .....केन्द्रित है।

3. निम्न में से सही उत्तर छांटिए:

   एक परिवार:

   (i) बच्चों के प्रजनन व पालन-पोषण के लिए अच्छा पर्यावरण देता है।

   (ii) बच्चों के लिए स्वार्थहीन और लम्बी अवधि की सेवा प्रदान करता है।

   (iii) अपने सदस्यों को सामाजिक पहचान देता है।

   (iv) अपने सदस्यों की बीमारी, दुर्भाग्य और वृद्धावस्था में देखभाल करता है।

   (v) उपरोक्त सभी।

4. परिवार में स्त्री की प्रतिष्ठा किस प्रकार बदली है? एक वाक्य में लिखिए।

आपने क्या सीखा

- परिवार समाज की बुनियादी इकाई है और व्यक्ति के लिए यह बहुत महत्वपूर्ण समूह है।
- परिवार व्यक्तियों का एक ऐसा समूह है जो विवाह, रक्त और दत्तकग्रहण से जुड़ा हुआ है।
- परिवार एक समग्र समूह है, जो कि सारी दुनिया में अपने सदस्यों के कल्याण के लिए समर्पित होता है।
- परिवार के निश्चित लक्षण इस प्रकार है:
  1. सार्वभौमिकता
  2. संवेगात्मक आधार
  3. रचनात्मक प्रभाव

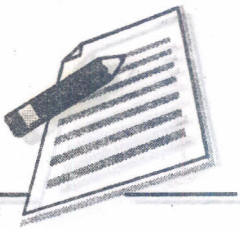

Notes

4. सीमित आकार
5. सामाजिक संरचना में एकाकी स्थिति
6. सदस्यों के प्रति उत्तरदायित्व
7. सामाजिक नियंत्रण
8. स्थायी और अस्थायी प्रकृति

- परिवार के सामान्य लक्षण इस प्रकार हैं:
  1. यौन-सम्बन्ध
  2. सामान्य निवास
  3. वंशज की मान्यता
  4. आर्थिक व्यवस्था
- परिवार के प्रकार्य निम्न हैं:
  1. जैविकीय प्रकार्य
  2. बच्चों का समाजीकरण और संस्कृतिग्रहण
  3. आर्थिक प्रकार्य
  4. मनोवैज्ञानिक प्रकार्य
- परिवार द्वारा किये गये प्रकार्य समाज के जीवित रहने के लिए आवश्यक हैं। विभिन्न कारकों द्वारा निर्धारित परिवार के प्रकार इस प्रकार हैं:

(i) आवास
1. पितृ स्थानीय परिवार
2. मातृ स्थानीय परिवार
3. नव स्थानिक परिवार
4. मातुल वंशीय परिवार

(ii) प्राधिकार
1. पितृवंशीय परिवार
2. मातृवंशीय परिवार

(iii) आकार
1. एकाकी परिवार
2. संयुक्त/विस्तृत परिवार

- भारत में परम्परागत परिवार की संरचना प्राचीन काल से संयुक्त रही है।

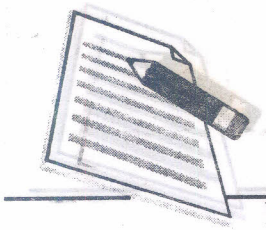

Notes

- भारत में संयुक्त परिवार के निम्नलिखित लक्षण हैं:
  (i) अधिकारवादी संरचना
  (ii) परिवारवादी संगठन
  (iii) उम्र और रिश्तेदारी पर निर्धारित प्रतिष्ठा
  (iv) रक्त सम्बन्धों की वरीयता वैवाहिक सम्बन्धों पर होती है।
  (v) संयुक्त उत्तरदायित्व
  (vi) सभी सदस्यों पर समान ध्यान दिया जाता है।
- निम्न कारकों के कारण परिवार में अन्तर आया है:
  (i) औद्योगीकरण
  (ii) नगरीकरण
  (iii) पश्चिमी संस्कृति
  (iv) आधुनिक शिक्षा
  (v) संवैधानिक उपाय
  (vi) परिवार में गृह कलह
- वे परिवर्तन जो परिवार की संरचना और प्रकार्य में आये हैं, इस तरह हैं:
  1. परिवार का आकार छोटा हो गया है।
  2. सदस्यों के बीच में सम्बन्ध बराबरी के हो गये हैं।
  3. पुरानी और नई पीढ़ी में संघर्ष ।
  4. विवाहित साथियों में वरण की स्वतन्त्रता।
  5. अब नातेदारी सम्बन्ध महत्वपूर्ण नहीं है।
  6. अधिकांश समाजों में अब परिवार उत्पादन की इकाई नहीं रहा।
  7. अस्थायित्व की समस्या, बढ़ता हुआ विवाह-विच्छेद ओर तलाक लेने वाले माता-पिता के बच्चों के पालन-पोषण की समस्या।
  8. कुछ विवाह विच्छेद प्राप्त करने वाले माता-पिता को डिंक (DINC) परिवार होते हैं यानी परिवार की दोहरी आय तो है पर उनके बच्चे नहीं हैं।

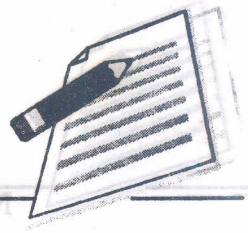

शब्दावली

मातुलवंशीय परिवार: ये ऐसे परिवार हैं जिनमें विवाहित पति-पत्नी मामा के घर में या मामा के निकट निवास करते हैं।

सहवास: दम्पत्ति विवाहित तो नहीं होते लेकिन एक ही मकान में सहवास करते हैं।

समवर्ती संयुक्त परिवार: यह ऐसा परिवार है, जो विस्तृत है और इसमें परिवार के भाई एक ही छत के नीचे रहते हैं।

डिन्क: दोहरी आय लेकिन बच्चे नहीं -- ऐसे परिवार, जिनमें पति और पत्नी दोनों की आय होती है लेकिन इनके कोई बच्चा नहीं होता।

अभिविन्यास का परिवार: यह वह परिवार है, जिसमें व्यक्ति का जन्म हुआ है।

संयुक्त परिवार: रक्त और विवाहित नातेदार जिसमें तीन या अधिक पीढ़ियां होती हैं।

किबूट्ज: यह परिवारों का एक समुदाय है, जिसमें 50 से 2000 सदस्य होते हैं और जिसमें बच्चों का उत्तरदायित्व सामूहिक होता है।

वंशीय संयुक्त परिवार: यह संयुक्त परिवार का एक विस्तृत स्वरूप है जहां माता-पिता अपने परिवार के किसी एक लड़के के साथ रहते हैं।

मातृ-सत्तात्मक परिवार: यह विवाह का वह स्वरूप है, जिसमें मां औपचारिक रूप से परिवार की मुखिया होती है और अपने परिवार पर प्रभुत्व शक्ति चलाती है।

मातृ स्थानिक परिवार: परिवार का वह प्रकार जिसमें दम्पत्ति पत्नी के माता के मकान या समुदाय में रहते हैं।

नवस्थानिक परिवार: यह विवाह का वह स्वरूप है जिसमें विवाहित जोड़ा प्राय: अपने माता-पिता के परिवार में नहीं रहता लेकिन अपना पृथक और नया आवास स्थापित करता है।

एकाकी परिवार: यह परिवार का वह प्रकार है जिसमें वैवाहिक जोड़ा अपने अविवाहित बच्चों के साथ रहता है।

पितृवंशीय परिवार: इस परिवार में परिवार का मुखिया पिता होता है और परिवार की सम्पूर्ण शक्ति भी उसके हाथ में होती है।

पितृस्थानिक परिवार: परिवार का यह वह प्रकार है जिसमें विवाहित जोड़ा पति के पिता के घर में रहता है।

पाठान्त प्रश्न

1. परिवार का क्या अर्थ है? अपने शब्दों में वर्णन कीजिए।
2. व्यक्तित्व निर्माण में परिवार की क्या भूमिका है, बताइए।
3. परिवार के सामान्य लक्षण बताइए।
4. परिवार के आर्थिक प्रकार्य क्या हैं?
5. भारत में संयुक्त परिवार के कौन से लक्षण हैं?
6. परिवार में अस्थायित्व की समस्या आ रही हैं, कैसे?

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

13.1

(1) गलत (2) विवाह (3) सभी

13.2

(1) सही (2) मनोवैज्ञानिक (3) सभी

13.3

(1) सही (2) मातृसत्तात्मक (3) मातुल स्थानिक

13.4

(1) गलत (2) वैवाहिक (3) पअ

13.5

(1) सही (2) बच्चा (3) अ